



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITYसं. 144]  
No. 144]नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मार्च 27, 2008/चैत्र 7, 1930  
NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 27, 2008/CHAITRA 7, 1930कारपोरेट कार्य मंत्रालय  
अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 मार्च, 2008

सा.का.नि. 212(अ).—केन्द्रीय सरकार, कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 211 की उप-धारा (3ग) और धारा 210क की उप-धारा (1) के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 642 की उप-धारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय लेखा मानक सलाहकार समिति के परामर्श से, कम्पनी (लेखा मानक) नियम, 2006 का संशोधन करने के लिए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :-

- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम कम्पनी (लेखा मानक) संशोधन नियम, 2008 है।
- (2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- कम्पनी (लेखा मानक) नियम, 2006, में उपाबन्ध के भाग ख के लेखा मानक-15 (कर्मचारी प्रसुविधायें), में निम्नलिखित संशोधन किए जाएंगे, अर्थात् :-

(i) निम्नलिखित पैरा, पैरा 92 के पश्चात् अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"92क. पैरा 145(ख)(iii) पश्चात्तुर्वी बीमांकिक लाभों के लेखा में संक्रमणकालीन दायित्व के किसी गैर-अभिज्ञात भाग पर विचार करने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।"

(ii) पैरा 116 और पैरा 116 का दृष्टांत देने वाले उदाहरण के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :-

"116. जहाँ कटौती योजना के अंतर्गत वाले केवल कुछ कर्मचारियों से सम्बंधित है, या जहाँ केवल किसी बाध्यता के भाग का ही निपटारा हुआ है, लाभ या हानि में गैर अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत का (तथा पैरा 145 (ख) के अधीन गैर-अभिज्ञात रहीं संक्रमणकालीन रकमों का) आनुपातिक हिस्सा सम्मिलित हैं। आनुपातिक हिस्सा कटौती या निपटारा के पूर्व और पश्चात् की

बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य के आधार पर अवधारित होता है, जब तक कि उन परिस्थितियों में अन्य आधार अधिक विवेकपूर्ण न हो।

पैरा 116 का दृष्टांत देने वाला उदाहरण

एक उद्यम व्यापार के एक खण्ड को बंद करता है और बंद खण्ड के कर्मचारी कोई आगे प्रसुविधाओं को अर्जित नहीं करेंगे। यह निपटारे के बिना कटौती है। चालू बीमांकिक मान्यताओं का प्रयोग करते हुए, (जिसमें चालू बाजार ब्याज दरें और अन्य बाजार कीमतें सम्मिलित हैं) कटौती के तुरंत पहले, उद्यम के पास एक निश्चित प्रसुविधा बाध्यता है, जिसका शुद्ध वर्तमान मूल्य 1000 रु. है और योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 820 रु. है और गैर-अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत 50 रु. है। उपक्रम ने पहली बार इस मानक को एक वर्ष पूर्व अंगीकार किया था। इसने शुद्ध दायित्व को 100 रु. से बढ़ा दिया है, जिसे उपक्रम ने पाँच वर्षों के दौरान अभिज्ञात करने का चुनाव किया (पैरा 145 (ख) देखें)। कटौती बाध्यता के वर्तमान मूल्य को 100 रु. से कम करके 900 रु. तक कर देती है।

पहले से गैर अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत का 10% (100 रु. 1000 रु.) उस बाध्यता का भाग है, जिसको कटौती करके हटा दिया गया था, इसलिए कटौती का प्रभाव इस प्रकार होगा :

	(रकम रु. में)		
	कटौती से पूर्व	कटौती लाभ	कटौती के पश्चात्
बाध्यता का शुद्ध वर्तमान मूल्य	1,000	(100)	900
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(820)	—	(820)
	180	(100)	80
गैर अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत	(50)	5	(45)
गैर अभिज्ञात संक्रमणकालीन रकम (100×4/5)	(80)	8	(72)
तुलनपत्र में अभिज्ञात शुद्ध दायित्व	(50)	(87)	(37)

37 रु. की एक आस्ति अभिज्ञात की जाएगी (यह माना गया है कि पैरा 59(ख) के अनुसार रकम 37 रु. से अधिक है)।"

(iii) निम्नलिखित पैरा, 'संक्रमणकालीन उपबंध' शीर्ष के अधीन तथा "निश्चित प्रसुविधा योजनाएं और सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के अतिरिक्त कर्मचारी प्रसुविधाएँ" उप-शीर्षक के पूर्व अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"142क. कोई उपक्रम पैरा 120(द) द्वारा अपेक्षित रकमों को भविष्यलक्षी रूप से प्रत्येक लेखा अवधि हेतु, उपक्रम द्वारा इस मानक को पहली बार अपनाने की तारीख से यथा अवधारित रकमों के रूप में प्रकट कर सकेगा।"

(iv) पैरा 145 और पैरा 144 और 145 का दृष्टांत देने वाले उदाहरण के स्थान पर निम्नलिखित रखे जाएंगे, अर्थात् :-

"145. यदि संक्रमणकालीन दायित्व, संशोधन पूर्व लेखा मानक 15 के अनुसार उसी तारीख को अभिज्ञात होने वाले दायित्व से अधिक है तो उपक्रम को पैरा 55 के अधीन निश्चित प्रसुविधा दायित्व के भाग के रूप में इस वृद्धि को अभिज्ञात करने का निम्नलिखित रूप से अपरिवर्तनीय चयन करना चाहिए :

(क) राजस्व आरक्षित तथा अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष (किसी सम्बंधित कर व्यय द्वारा समायोजित करने के पश्चात्) के लिए तुरन्त ही एक समायोजन के रूप में; या

(ख) मानक को अंगीकार करने की तारीख से पाँच वर्षों तक सरल-रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में।

यदि उपक्रम (ख) का चुनाव करता है तो, उपक्रम को :

(i) तुलन पत्र में अभिज्ञात किसी भी आस्ति के मापन में पैरा 59 (ख) में वर्णित सीमा को लागू करना चाहिए;

(ii) प्रत्येक तुलन पत्र तारीख को (1) गैर अभिज्ञात वृद्धि की रकम; और (2) चालू अवधि में अभिज्ञात रकम को प्रकट करना चाहिए;

(iii) पश्चात्पूर्वी बीमांकिक लाभों (किन्तु नकारात्मक पूर्व सेवा लागत नहीं) के अभिज्ञान को केवल इस सीमा तक अभिज्ञात करना चाहिए कि शुद्ध संचयी गैर-अभिज्ञात बीमांकिक लाभ (उस बीमांकिक लाभ के अभिज्ञान से पहले), संक्रमणकालीन दायित्व के गैर-अभिज्ञात भाग से अधिक हो; और

(iv) निपटारे या कटौती पर किसी भी पश्चात्पूर्वी लाभ या हानि को अवधारित करने में गैर-अभिज्ञात संक्रमणकालीन दायित्व के सम्बन्धित भाग को सम्मिलित करना चाहिए।

यदि संक्रमणकालीन दायित्व, संशोधन पूर्व लेखा मानक 15 के अनुसार उसी तारीख को अभिज्ञात हो चुके दायित्व से कम है तो, उपक्रम को उस कटौती का राजस्व आरक्षितियों और अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष के लिए तुरन्त समायोजन के रूप में अभिज्ञात कर लेना चाहिए।

पैरा 144 और 145 का दृष्टांत देने वाला उदाहरण

31 मार्च, 20X7 को किसी उद्यम के तुलनपत्र में 100 रु. का पेंशन दायित्व को सम्मिलित किया जाता है जो कि 1995 में भारतीय

चार्टर्ड एकाउंटेंट संस्थान द्वारा जारी किए गए पूर्व संशोधित लेखा मानक 15 के अधीन अभिज्ञात है। उद्यम इस मानक को 1 अप्रैल, 20X7 को अपनाता है, जबकि इस मानक के अधीन बाध्यताओं का वर्तमान मूल्य 1300 रु. है तथा योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 1000 रु. है। 1 अप्रैल, 20X1 को उद्यम ने पेंशन बढ़ा दी थी (अनिहित प्रसुविधाओं की लागत 160 रु., तथा निहित होने तक शेष औसत अवधि उस तारीख को 10 वर्ष है)

(रकम रु. में)

संक्रमणकालीन प्रभाव निम्न प्रकार से है :

बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,300
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(1,000)
घटा : पूर्व सेवा लागत जिसको पश्चात् की अवधि में अभिज्ञात किया जाएगा (160×4/10)	(64)
संक्रमणकालीन दायित्व	236
पहले से ही अभिज्ञात दायित्व	100
दायित्व में वृद्धि	136

कोई उपक्रम दायित्व में यह वृद्धि (सम्बद्ध कर व्यय द्वारा समायोजित) को या तो 1 अप्रैल, 20X7 राजस्व आरक्षित तथा अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष के प्रति तुरन्त एक समायोजन के रूप में या फिर उस तारीख से पाँच वर्षों तक सीधी रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में अभिज्ञात करने का चयन कर सकता है। चयन अपरिवर्तनीय है।

31 मार्च, 20X8 को मानक के अधीन बाध्यता का वर्तमान मूल्य 1,400 रु. है तथा योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 1,050 रु. है। मानक को अपनाने की तारीख से शुद्ध संचयी गैर-अभिज्ञात बीमांकिक लाभ 120 रु. है। पैरा 92 के अनुसार उपक्रम सभी बीमांकिक लाभों व हानियों को तुरन्त अभिज्ञात करने के लिए अपेक्षित है।

पैरा 145 (ख) (iii) में दी गई सीमा का प्रभाव, निम्नलिखित प्रकार से है :

(रकम रु. में)

शुद्ध गैर अभिज्ञात बीमांकिक लाभ	120
संक्रमणकालीन दायित्व का गैर अभिज्ञात भाग (136×4/5)	
(यदि उपक्रम 5 वर्षों के दौरान इसे अभिज्ञात करने की नीति अपनाता है)	109
अभिज्ञात होने वाला अधिकतम लाभ	11

[फा. सं. 1/2/2008/सी एल-V]

जितेश खोसला, संयुक्त सचिव

टिप्पण : मूल अधिसूचना सं. सा.का.नि. 739(अ), तारीख दिसम्बर, 7, 2006 द्वारा प्रकाशित की गई थी।

# MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

## NOTIFICATION

New Delhi, the 27th March, 2008

**G.S.R. 212(E).**—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 642 read with sub-section (1) of Section 210A and sub-section (3C) of Section 211 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government in consultation with the National Advisory Committee on Accounting Standards, hereby makes the following rules to amend the Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 namely :—

1. (1) These rules may be called the Companies (Accounting Standards) Amendment Rules, 2008.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, in the Annexure, in Part B, in Accounting Standards—15 (Employee Benefits)—

(i) after paragraph 92, the following shall be inserted, namely :—

“92A. Paragraph 145(b)(iii) explains the need to consider any unrecognised part of the transitional liability in accounting for subsequent actuarial gains.”

(ii) for paragraph 116 and example illustrating Paragraph 116, the following shall be substituted, namely :

“116. Where a curtailment relates only to some of the employees covered by a plan, or where only part of an obligation is settled, the gain or loss includes a proportionate share of the previously unrecognised past service cost [and of transitional amounts remaining unrecognised under paragraph 145(b)]. The proportionate share is determined on the basis of the present value of the obligations before and after the curtailment or settlement, unless another basis is more rational in the circumstances.

### Example Illustrating Paragraph 116

An enterprise discontinues a business segment and employees of the discontinued segment will earn no further benefits. This is a curtailment without a settlement. Using current actuarial assumptions (including current market interest rates and other current market prices) immediately before the curtailment, the enterprise has a defined benefit obligation with a net present value of Rs. 1,000 and plan assets with a fair value of Rs. 820 and unrecognised past service cost of Rs. 50. The enterprise had first adopted this Standard one year before. This increased the net liability by Rs. 100, which the enterprise chose to recognise over five years [see paragraph 145(b)]. The curtailment reduces the net present value of the obligation by Rs. 100 to Rs. 900.

Of the previously unrecognised past service cost and transitional amounts, 10% (Rs. 100/Rs. 1000) relates to the part of the obligation that was eliminated through the curtailment. Therefore, the effect of the curtailment is as follows :

	(Amount in Rs.)		
	Before Curtailment	Curtailment Gain	After Curtailment
Net present value of obligation	1,000	(100)	900
Fair value of plan assets	(820)	—	(820)
	180	(100)	80
Unrecognised past service cost	(50)	5	(45)
Unrecognised transitional amount (100×4/5)	(80)	8	(72)
Net liability recognised in balance sheet	(50)	(87)	(37)

An asset of Rs. 37 will be recognised [it is assumed that the amount under paragraph 59(b) is higher than Rs. 37].”

(iii) under the heading ‘Transitional Provisions’ and before the sub-heading “Employee Benefits other than Defined Benefit Plans and Termination Benefits”, the following shall be inserted, namely :—

“142A. An enterprise may disclose the amounts required by paragraph 120(n) as the amounts are determined for each accounting period prospectively from the date the enterprise first adopts this Standard.”

(iv) for paragraph 145 and the example illustrating paragraph 144 and 145, the following shall be substituted, namely :—

“145. If the transitional liability is more than the liability that would have been recognised at the same date as per the pre-revised AS 15, the enterprise should make an irrevocable choice to recognise that increase as part of its defined benefit liability under paragraph 55 :

(a) immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserve and surplus (as adjusted by any related tax expense); or

(b) as an expense on a straight-line basis over up to five years from the date of adoption.

If an enterprise chooses (b), the enterprise should :

(i) apply the limit described in paragraph 59(b) in measuring any asset recognised in the balance sheet;

(ii) disclose at each balance sheet date (1) the amount of the increase that remains unrecognised; and (2) the amount recognised in the current period;

(iii) limit the recognition of subsequent actuarial gains (but not negative past service cost) only to the extent that the net cumulative unrecognised actuarial gains (before

recognition of that actuarial gain) exceed the unrecognised part of the transitional liability; and

- (iv) include the related part of the unrecognised transitional liability in determining any subsequent gain or loss on settlement or curtailment.

If the transitional liability is less than the liability that would have been recognised at the same date as per the pre-revised AS 15, the enterprise should recognise that decrease immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserves and surplus.

#### Example Illustrating Paragraphs 144 and 145

At 31st March 20X7, an enterprise's balance sheet includes a pension liability of Rs. 100, recognised as per the pre-revised AS 15 issued by the ICAI in 1995. The enterprise adopts the Standard as of 1st April, 20X7, when the present value of the obligation under the Standard is Rs. 1,300 and the fair value of plan assets is Rs. 1,000. On 1st April, 20X1, the enterprise had improved pensions (cost for non-vested benefits : Rs. 160; and average remaining period at that date until vesting : 10 years).

	(Amount in Rs.)
The transitional effect is as follows:	
Present value of the obligation	1,300
Fair value of plan assets	(1,000)
Less : past service cost to be recognised in later periods ( $160 \times 4/10$ )	(64)
Transitional liability	236
Liability already recognised	100
Increase in liability	136

An enterprise may choose to recognise the increase in liability (as adjusted by any related tax expense) either immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserve and surplus as on 1st April, 20X7 or as an expense on straight line basis over up to five years from that date. The choice is irrevocable.

At 31st March, 20X8, the present value of the obligation under the Standard is Rs. 1,400 and the fair value of plan assets is Rs. 1,050. Net cumulative unrecognized actuarial gains since the date of adopting the Standard are Rs. 120. The enterprise is required, as per paragraph 92, to recognise all actuarial gains and losses immediately.

The effect of the limit in paragraph 145(b) (iii) is as follows :

	(Amount in Rs.)
Net unrecognized actuarial gains	120
Unrecognized part of the transitional liability ( $136 \times 4/5$ )	109
(If the enterprise adopts the policy of recognising it over 5 years)	—
Maximum gain to be recognised	11"

[F. No. 1/2/2008/CL.V]

JITESH KHOSLA, Jt. Secy.

**Note :—** The principal notification was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) *vide* number G.S.R. 739(E), dated the 7th December, 2006.